मांगी गई मनौती पूरी अवश्य करें

इस बात का सदैव ध्यान रखें कि किसी देवी, देवता, पीर मुर्शिद, यक्ष किन्नर आदि का कहीं कोई अपमान जाने-अंजाने में न हो जाए। मनौती-मन्नत मांगने से पूर्व तो आप विशेष रुप से सतर्क रहें। यदि मांगी गयी मनौती इच्छित कार्य की पूर्ती के बाद आप पूर्ण नहीं करते हैं तो समझ लीजिए कि आपको विपदा और दारिद्रय ने घेरना प्रारंभ कर दिया है। ऐसा भी नहीं होता कि मनोती पूर्ण न करने के बाद आपका शरीरान्त हो जाता है और उसको पूर्ण करने की आवश्यकता भी शरीर के बाद नहीं रह जाती है। यह बात गांठ बांध कर रख लें कि यह तथा इसका दुष्प्रभाव जन्म-जन्मांतर तक भी पीछा नहीं छोड़ता। पता नहीं हम अपने किन पुर्खों की मनौती का दुष्परिणाम भोग रहें हो अथवा हमारे बाद हमारी भावी संतान हमारे द्वारा पूरी न की गयी मनौती का परिणाम भोगें। इसलिए इस विषय के प्रति बहुत ही सतर्क रहें।

पहले लोग मनौती की बात लिखित से रुप घर में कहीं सुरक्षित रख देते थे। उन्हें सदैव भय रहता था कि पता नहीं कब अकस्मात् उपर वाले का बुलावा आ जाए। उनके बाद उनकी भावी संतान उनकी इच्छा पूरी भी करती थीं। आज भी इस तथ्य के अनेक प्रमाण देखने को मिल जाएंगे। यदि आपको अपनी किसी पूर्वज की पूरी न की गयी मनौती का पता चल जाए तो उसे पूरी करने में आलस्य कभी न करें। जो कुछ भी अनुमानित पैसा आदि उस मनौती को पूर्ण करने में लगना है यथा शीघ्र हल्दी तथा चावल के साथ मिला कर कहीं सुरक्षित रख दें। कितना भी कठिन समय आए उस अंश में कभी कुछ न निकालें। जब भी निकट भविष्य में समय मिले इस पैसे से वह मनौती पूर्ण कर दें जो आपके पुरखे छोड़ गये थे। यदि इसमें पैसा कम पड़ जाए तो अपने पास से मिला दें। यदि पैसा बच जाए तो उन्हें पुण्य कर्म में व्यय कर दें। इन बचे पैसा का उपयोग अपने लिए कदापि न करें।

अनेक प्रकरण ऐसे सामने आए हैं कि आपके कोई पूर्वज मनौती तो मांग बैठे पर कुछ कारणों से वह पूरी किए बिना ही स्वर्ग सिधार गए और अनजाने में आपको उसका भुगतान करना पड़ रहा है। ऐसी विषम स्थिति में एक उपाय आप अवश्य कर लें।

बुधवार के दिन आप सारे दिन नमक का सेवन न करें। यह पितृ ऋण के प्रायश्चित स्वरुप है। अब क्योंकि आपको यह तो पता है नहीं कि पूर्वज की किस न पूरी की गयी मनौती का दुष्परिणाम आप भोग रहे हैं, इसलिए बुधवार को रात्रि में अपनी आय में से कुछ अंश निकालकर कहीं रख दिया करें। इस रखे हुए 'कुछ' का आप अपने बुद्धि-विवेक से अगले दिन अथवा गुरुवार को 'कुछ' कर दें। प्रत्येक हफ्ते का नियम यदि कठिन लगे तो माह में किसी एक बुधवार को यह नियम अवश्य करते रहें। इस 'कुछ' में एक पैसा भी हो सकता है और अधिक भी, यह आपकी श्रद्धा-भाव और सामर्थ्य पर निर्भर करता है। कितने समय तक यह करते रहना पड़ता है, इसका भी कोई नियम नहीं है। यह भी आपके बुद्धि-विवेक पर निर्भर है। यह बात अवश्य मानकर चलें कि इस मनौती के निमित्त आप जो कुछ भी करेंगे आप पितृ ऋण से उऋण होंगे। इसका पुण्य फल आपको अवश्य मिलेगा।